।। अथ श्रीसाईसच्चरित।। ।। अध्याय ५१ ।।

उपसंहार :

अध्याय - ५१ पूर्ण हो चुका है और अब अन्तिम अध्यय (मूल ग्रन्थ का ५२ वाँ अध्याय) लिखा जा रहा है। इसमें हेमाड़पंत ने अन्तिम समालोचना की है और उसी प्रकार सूची लिखने का वचन दिया है, जिस प्रकार कि अन्य मराठी धार्मिक काव्यग्रन्थों में विषय की सूची अन्त में लिखी जाती है। अभाग्यवश हेमाड़पंत के कागजपत्रों की छानबीन करने पर भी वह सूची प्राप्त न हो सकी। तब बाबा के एक योग्य तथा धार्मिक भक्त ठाणे के अवकाशप्राप्त मामलतदार श्री. बी.व्ही. देव ने उसे रचकर प्रस्तुत किया। पुस्तक के प्रारम्भ में ही विषयसूची देने तथा प्रत्येक अध्याय में विषय का संकेत शीर्षक स्वरुप लिखना ही आधुनिक प्रथा है, इसलिए यहाँ अनुक्रमणिका नहीं दी जा रही है। अतः इस अध्याय को उपसंहार समझना ही उपयुक्त होगा। अभाग्यवश हेमाड़पंत उस समय तक जीवित न रहे कि वे अपने लिखे हुए इस अध्याय की प्रति में संशोधन करके उसे छपने योग्य बनाते।

श्री सद्‌गुरु साई की महानता

'' हे साई, मै आपकी चरण वन्दना कर आपसे 'शरण' की याचना करता हूँ, क्योंकि आप ही इस अखिल विश्व के एकमात्र आधार हैं। '' यदि ऐसी ही धारणा लेकर हम उनका भजन-पूजन करें तो यह निश्चत है कि हमारी समस्त इच्छायें शीघ्र पूर्ण होंगी और हमें अपने परम लक्ष्य की प्राप्ति हो जाएगी। आज निन्दित विचारों के तट पर माया-मोह के झंझावात से धैर्य रुपी वृक्ष की जड़ें उखड़ गई हैं। अहंकार रुपी वायु की प्रबलता से हृदय रुपी समुद्र में तूफान उठ खड़ा हुआ है, जिसमें क्रोध और घृणा रुपी घड़ियाल तैरते हैं और अहंभाव एवं सन्देह रुपी नाना संकल्प-विकल्पों की संतत भँवरों में निन्दा, घृणा और ईर्ष्यारुपी अगणित मछलियाँ विहार कर रही हैं। यद्यपि यह समुद इतना भयानक है तो भी हमारे सद्‌गुरु साई महाराज उसमें अगस्त्य स्वरुप ही हैं। इसलिए भक्तों को किंचित्‌मात्र भी भयभीत होने की आवश्यकता नहीं है। हमारे सद्‌गुरु तो जहाज हैं और वे हमें कुशलतापूर्वक इस भयानक भव -समुद्र से पार उतार देंगे ।

प्रार्थना

श्री सच्चिदानंद साई महाराज को साष्टांग नमस्कार करके उनके चरण पकड़ कर हम सब भक्तों के कल्याणार्थ उनसे प्रार्थन करते हैं कि '' हे साई! हमारे मन की चंचलता और वासनाओं को दूर करो। हे प्रभो! तुम्हारे श्रीचरणों के अतिरिक्त हममें किसी अन्य वस्तु की लालसा न रहे । तुम्हारा यह चरित्र घर-घर पहुँचे और इसका नित्य पठन-पाठन हो और जो भक्त इसका प्रेमपूर्वक अध्ययन करें, उनके समस्त संकट दूर हों ।

फलश्रुति (अध्ययन का पुरस्कार)

अब इस पुस्तक के अध्ययन से प्राप्त होने वाले फल के सम्बन्ध में कुछ शब्द लिखूँगा। इस ग्रन्थ के पठन-पाठन से मनोवांछित फल की प्राप्ति होगी। पवित्र गोदावरी नदी में स्नान कर, शिरड़ी के समाधि मन्दिर में श्री साईबाबा की समाधि के दर्शन कर लेने के पश्चात् इस ग्रन्थ का पठन-पाठन या श्रवण प्रारम्भ करोगे तो तुम्हारी तिगुनी आपत्तियाँ भी दूर हो जायेंगी। समय -समय पर श्री साईबाबा की कथा-वार्त्ता करते रहने से तुमहें आध्यत्मिक जगत् के प्रति अभिरुचि हो जाएँगी और यदि तुम इस प्रकार नियम तथा प्रेमपूर्वक अभ्यास करते रहे तो तुम्हारे समस्त पाप अवश्य नष्ट हो जायेंगे । **यदि संचमुच ही तुम आवागमन से मुक्ति चाहते हो तो तुम्हें साई कथाओं का नित्य पठन-पाठन, स्मरण और उनके चरणों में प्रगाढ़ प्रीति रखनी चाहिये । १ साई कथारुपी समुद्र का मंथन कर उसमें से प्राप्त रत्नों का दूसरों को वितरण करो,** जिसे से तुम्हें नित्य नूतन आनन्द का अनुभव होगा और श्रोतागण अधःपतन से बच जाएगे । यदि भक्तगण अनन्य भाव से उनकी शरण आयें तो उनका ''मैं'' नष्ट होकर बाबा से अभिन्नता प्राप्त हो जाएँगी, जैसे कि नदी समुद्र में मिल जाती है। यदि तुम तीन अवस्थाओं (अर्थात् -जागृति , स्वप्न और निद्रा) में से किसी एक में भी साई-चिन्तन में लीन हो जाओ तो तुम्हारा सांसारिक चक्र से छुटकारा हो जाएगा

। स्नान कर प्रेम और श्रद्धायुक्त होकर जो इस ग्रन्थ का एक सप्ताह में पठन समाप्त करेंगे, उनके सारे कष्ट दूर हो जाएँगे २ या जो इसका नित्य पठन या श्रवण करेंगे, उन्हें सब भयों से तुरन्त छुटकारा मिल जाएगा।

२. सततं कीर्तयन्तो मां यतन्तश्च दृढव्रताः।
नमस्यन्तश्च मां भक्त्या नित्य युक्ताउपासते ।। गीता ९ ।।१४।।

इसके अध्ययन से हर एक को अपनी श्रद्धा और भक्ति के अनुसार फल मिलेगा। परन्तु इन दोनों के अभाव में किसी भी फल की प्राप्ति होना संभव नहीं है। यदिं तुम इस ग्रन्थ का आदरपूर्वक पठन करोगे तो श्री साई प्रसन्न होकर तुम्हें अज्ञान और दरिद्रता के पाश से मुक्त कर, ज्ञान, धन और समृद्धि प्रदान करेंगे। यदि एकाग्रचित्त होकर नित्य एक अध्याय ही पढ़ोगे तो तुम्हें अपरिमित सुख की प्राप्ति होगी। इस ग्रन्थ को अपने घर पर गुरु-पूर्णिमा, गोकुल अष्टमी, रामनवमी, वियादशमी और दीपावली के दिन अवश्य पढ़ना चाहिए। यदि ध्यानपूर्वक तुम केवल इसी ग्रन्थ का अध्ययन करते रहोगे तो तुम्हें सुख और सन्तोष प्राप्त होगा और सदैव श्री साई चरणारविंदों का स्मरण बना रहेगा और इस प्रकार तुम भवसागर से सहज ही पार हो जाओगे । इसके अध्ययन से रोगियों को स्थास्थ्य, निर्धनों को धन, दुःखित और पीड़ितों को संपन्नता मिलेगी तथा मन के समस्त विकार दूर होकर मानसिक शान्ति प्राप्त होगी।

मेरे प्रिय भक्त और श्रोतागण ! आपको प्रणाम करते हुए मेरा आपसे एक विशेष निवेदन है कि जिनकी कथा आपने इतने दिनों और महीनों से सुनी है, उनके कलिमलहारी और मनोहर चरणों को कभी विस्मृत न होने दें । जिस उत्साह, श्रद्धा और लगन के साथ आप इन कथाओं का पठन या श्रवण करेंगे, श्री साईबाबा वैसे ही सेवा करने की बुद्धि हमें प्रदान करेंगे । लेखक और पाठक इस कार्य में परस्पर सहयोग देकर सुखी होवें।

प्रसाद-याचना

अन्त में हम इस पुस्तक को समाप्त करते हुए सर्वशक्तिमान परमात्मा से निम्नलिखित कृपा या प्रसादयाचना करते हैं-'' हे ईश्वर ! पाठकों और भक्तों को श्री साई-चरणों में पूर्ण और अनन्य भक्ति दो। श्री साई का मनोहर स्वरुप ही उनकी आँखों में सदा बसा रहे और वे समस्त प्राणियों में देवाधिदेव साई भगवान् का ही दर्शन करें । एवमस्तु । ''

।। श्री सद्‌गुरु साईनाथार्पणमस्तु । शुभं भवतु।।

सप्ताहे पारायणः सप्तम विश्राम

।। ॐ श्री साई यशःकाय शिरडीवासिने नमः

समाप्त

आरती

आरती साई बाबा। सौख्यदातार जीवां । चरणजतलीं द्यावा
दासा विसावां , भक्तां विसावा। आरती०।। जाळुनिया अनंग । स्वस्वरुपीं
राहे दंग मुमुक्षु जनां दावी । निज डोळा श्रीरंग, डोळा श्रीरंग । आरती १ ।
जया मनीं जैसा भाव। तया तैसा अनुभव। दाविसी दयाघना। ऐसी तुझी
ही माव, तुझी ही माव। आरती ०।।२।। तुमचे नाम घ्यातां । हरे संसृति
व्यथा। अगाध तव करणीं । मार्ग दाविसी अनाथा, दाविसी अनाथा।
आरती०।।३।। कलियुगीं अवतार । सगुण ब्रह्म साचार । अवतीर्ण
झालासी। स्वामी दत्त दिगंबर। दत्त दिगंबर । आरती ०।।४।।
आठा दिवसां गुरुवारीं। भक्त करीति वारी । प्रभुपद पहावया। भव भय
निवारी। भय निवारी आरती०।।५।। माझा निज द्रव्य ठेवा। तव
चरणरज सेवा। मागणें हेचि आतां। तुम्हां देवाधिदेवा, देवाधिदेवा।
आरती०(।।६।। इच्छित दीन चातक । निर्मल तोय निसुख। पाजावें
माधवा या । सांभाळ आपुली भाक, आपुली भाक। आरती साई बाबा।
सौख्य दातार जीवा ०।।७।।

भावार्थ

हे जीवों को सुख देने वाले साई बाबा ! हम तुम्हारी आरती करते हैं। अपने दास और भक्तों क्ने अपने चरणों की शीतल छाया में स्थान दो। प्रदीप्त भावसे तुम सदा आत्मलीन रहते हो और मुमुक्ष जनों को ईश्वर की प्राप्ति करा देते हो। जैसा जिसका भाव होता है, उसे तुम वैसा ही अनुभव करा देते हो। हे दयालु! तुम्हारा कुछ ऐसा ही वैशिष्ट्य है । तुम्हारे श्रीचरणों का ध्यानमात्र करने से भक्त इस संसार के भय से मुक्त हो जाता है। तुम सदैव दीन और अनाथों की रक्षा करते रहे हो। तुम्हारी कार्यशैली अपरंपार है। हे दत्त ! इस कलयुग में तुम सगुण ब्रह्म के रुप में अवतीर्ण हुए हो। इसीलिए जो भक्त नित्य गुरुवार को तुम्हारे पास आवे, उन्हें सांसारिक भय से मुक्त करके भगवद्-दर्शन योग्य बनाओ । हे देवाधिदेव! तुम्हारे चरणकमल ही मेरी सम्पत्ति हैं। जिस प्रकार मेघ स्वाति नक्षत्र की बूँद से चातक पक्षी की प्यास बुझा देता है, उसी प्रकार माधव (यहाँ अपना नाम लगायें) की भी प्यास बुझाकर अपने वचनों का पालन करो।
ॐ श्री साई यशःकाय शिरडीवासिने नमः ।।
ॐ शांति : शांतिः शांतिः